इकाई 1 मध्य और पश्चिम एशिया में राजनैतिक संघटन

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- भारतीय सीमा पर मुगलों की उपस्थिति की पृष्ठभूमि से अवगत हो सकेंगे तथा उनके मूल स्थान और पूर्वजों के बारे में बता सकेंगे,
- मुगल साम्राज्य के दो शक्तिशाली पड़ोसी राज्यों की भोगौलिक सीमा को पहचान सकेंगे,
- उज़बेग और सफ़वी साम्राज्यों की स्थापना के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को रेखांकित कर सकेंगे,
- आरंभिक काल में मुगलों की आंतरिक और बाह्‌य नीतियों और निर्णयों को प्रभावित और आकार देने वाले कारकों का विश्लेषण कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

पन्द्रहवीं शताब्दी के आते-आते भारत की उत्तरी-पूर्वी सीमा पर कुछ महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय राजनीतिक उथल-पुथल हुई तथा साम्राज्यों में बदलाव आया। इस बदली हुई स्थिति में मुगलों ने भारत की ओर रुख किया और यहां अपना राज्य स्थापित किया। इसी माहौल में तूरान (मध्य एशिया में ट्रान्सऑक्सियाना और ईरान (फारस) दो नये राज्य कायम हुए। तूरान पर उज़बेगों का और ईरान पर सफ़वी बादशाहों का शासन कायम हुआ।

सोलहवीं शताब्दी के प्रथम दशक में मध्य और पश्चिम एशिया उभरे राजनीतिक ढाँचे का अध्ययन जरूरी है क्योंकि इन क्षेत्रों और भारत के बीच परंपरागत और नजदीकी सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध थे। शैइबानी खाँ के नेतृत्व में दश्त-ए-किपचक के विस्थापित उज़बेग राजकुमारों ने तैमूर द्वारा स्थापित राज्य को नष्ट कर दिया और तैमूर शासकों से मध्य एशिया छीन लिया। वस्तुतः इसी कारण से बाबर भारत की ओर अग्रसर हुआ।

मुगलों का मूल स्थान मध्य एशिया था, जहां उन्होंने लगभग तेरह दशकों (1370-1505) तक शासन किया। इस दौरान उनके पास एक जाँची-परखी हुई प्रशासनिक व्यवस्था तैयार हो गयी थी, वसीयत के रूप में उन्हें तुर्की मुगल शब्दावली, संस्थान (राजनीतिक और आर्थिक) और रस्में (देखिए खंड 4) प्राप्त थीं, जिनका स्पष्ट प्रभाव भारत में मुगल शासन के दौरान देखा जा सकता है। मुगलकालीन भारत के अध्ययन के लिए आसपास के क्षेत्रों के बारे में थोड़ा-बहुत जानना जरूरी है। मुगलकालीन भारत को इन क्षेत्रों में हुई गतिविधियों से जोड़कर ही अच्छी तरह समझा जा सकता है। इस प्रकार के अध्ययन से हमें भारत में मुगल शासन के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और प्रकृति को समझने में मदद मिलेगी। मुगलों के साथ-साथ मध्य एशिया और फारस का एक साथ उत्थान और पतन हुआ। सोलहवीं शताब्दी के दौरान प्रत्येक स्तर पर इन राज्यों के बीच राजनीतिक और सांस्कृतिक संबंध स्थापित हुए। विचारों के आदान-प्रदान, लोगों के आने जाने और वस्तु विनिमय के चलते युगों से चली आ रही समान सांस्कृतिक विरासत समृद्ध हुई।

यहां इस बात का उल्लेख करना जरूरी है कि पश्चिम और मध्य एशिया की परिभाषा विवादास्पद है, क्योंकि इसके सीमा-क्षेत्र का निर्धारण भौगोलिक या क्षेत्रीय प्रसार की अपेक्षा व्याख्याओं के अनुरूप बदलता रहा है। जिस क्षेत्र का अध्ययन हम कर रहे हैं उसे सर्वसम्मत नाम "अंदरूनी एशिया" कहना ही अधिक संगत होगा। इस संदर्भ में पश्चिम और मध्य एशिया का प्रयोग दो "राज्यों" क्रमशः तूरान और ईरान के लिए किया जाएगा। सोलहवीं शताब्दी के दौरान एक स्वतंत्र राजनीतिक और सांस्कृतिक अस्तित्व के रूप में उभरे ये राज्य ज्यादातर किसी केन्द्रीकृत शक्ति (जैसे उमयूयद, अब्बासिद, मंगोल और तैमूर) के अधीन स्थापित बृहद् साम्राज्य के अंग हुआ करते थे। अतः दोनों राज्यों की प्रशासनिक और संगठनात्मक व्यवस्था में काफी समानताएं थीं। उनकी जमीन एक रही, युगों से चली आ रही समानताएं बनी रहीं, परम्पराएं और विरासत समान रहीं, पर युग-परिवर्तन से उत्पन्न धार्मिक-राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन ने उन्हें एक नया और अलग स्वरूप प्रदान किया। हालांकि 16वीं शताब्दी के दौरान इन दोनों राज्यों का आधार जनजातीय ही था, उनके सांस्कृतिक और प्रजातीय अलगाव बने रहे तथा (साप्रदायिक विभेद के कारण यह काफी गहरा हो गया) उनके पतन होने तक यही स्थिति बनी रही। इस इकाई में तूरान और ईरान से संबद्ध विभिन्न मुद्दों की जानकारी दी जाएगी।

1.2 तूरान और ईरान की भौगोलिक सीमा

अंदरूनी एशिया क्षेत्र जिसे तूरान भी कहते हैं, दो नदियों के बीच बसा हुआ था। अरब आक्रमणकारियों ने इस क्षेत्र को मवारून्नहर (अर्थात् दो नदियों—सीर एवं अमू—के बीच) कहा था। यह क्षेत्र उत्तर में अरल सागर, सीर नदी और तुर्कीस्तान से घिरा था; दक्षिण में ईरान, अमू नदी और अफगानिस्तान था; पूरब में तीनशान और हिंदुकुश पर्वतों से लेकर कराकोरम रेगिस्तान था; पश्चिम में कैस्पियन सागर और साथ में खाई, पहाड़, घाटी, रेगिस्तान तथा शुष्क और अर्द्धशुष्क भूमि। इस प्रकार इस क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की जीवन शैलियां देखने को मिलती थीं। यहां बंजारे और पशुपालक भी थे तथा स्थाई रूप से बसे हुए लोग भी। इस क्षेत्र में जमीन के अंदर जल प्रवाह था और जगह-जगह घिरे हुए समुद्र तटीय क्षेत्र थे, जो समुद्र से दूर थे और अतलांतिक और प्रशांत सागर से अलग-थलग थे। कृषि के अलावा पशुपालन एक लोकप्रिय व्यवसाय था। यह स्थान घोड़ों के लिए प्रसिद्ध था। यहां से काफी मात्रा में भारत को घोड़ों का निर्यात किया जाता था। समरकंदी कागज़ और फल (ताजे भी और सूखे भी) निर्यात किए जाते थे। एलबुर्ज पर्वतों के पूर्वी घाट ईरानी पठार को तुर्कीस्तान (ईरान) से अलग करते थे।

जहां तक भौगोलिक विस्तार का सवाल है, ईरान और फारस में एशिया माइनर और कॉकेसस की पहाड़ी शृंखलाओं से लेकर पंजाब की समतल धरती भी शामिल थी, जिसे ईरानी पठार के नाम से जाना जाता था। मध्य पठार के रेतीले लवणीय रेगिस्तान को पहाड़ी शृंखला ने घेर रखा था। अतः यह एक प्रकार का बंद समुद्रतट बन गया था। ईरान के चार प्रमुख हिस्से थेः खुजिस्तान और लघु बाहरी समतल भूमि को मिलाकर बनी ज़ागरोस व्यवस्था; ईरान की उत्तरी उच्च भूमि (जैसे अलबुर्ज और तालिश व्यवस्था) और कैस्पियन समतल भूमि; पूर्वी और दक्षिण पूर्वी उच्च भूमि रिम और अंदर का इलाका। जहां तक आर्थिक जीवन का प्रश्न है सभी प्रकार की जीवनशैलियां एक साथ मौजूद थीं। ऊपरी भाग में पशुपालन, निचले इलाकों में कृषि

व्यवस्था तथा पश्चिम में कुर्दिश गडेरिये बंजारों का जीवन बिताते थे। ज़ागरोस के उत्तरी-पश्चिमी भाग प्राचीन पूर्वी-पश्चिमी व्यापार मार्गों से जुड़े हुए थे और यहां से ईरानी ऊन, चमड़े, कालीन और रेशम का निर्यात होता था।

1.3 उज़बेगों और सफ़वियों का पूर्ववर्ती इतिहास

तूरान या ट्रान्सऑक्सियाना के उज़बेग चंगेज के बड़े पुत्र जूज़ी के वशंज थे। उन्होंने जूज़ी के अधीनस्थ दश्त-ए-किपचक के उज़बेग खाँ (1212-40) पर अपना नाम आधारित किया था। उज़बेग चग़ताई तुर्की बोलते थे और तुर्क-मंगोल परंपरा का निर्वाह करते थे। वे कट्टर सुन्नी थे और हनफी कानून मानते थे। नैमान, कुशजी, दुर्मान, कुनघरात और अन्य तुर्क-मंगोल जनजातियां उज़बेग राज्य को अपना समर्थन देती थीं। बार-बार आक्रमण करके इनके विरोधी कबीलों (मंगोल, कज़ाक़ और किरघिज़) ने इनकी शक्ति काफी कम कर दी।

सफ़वी

सफ़वी मूलतः ईरानी (कुर्दिस्तान से) थे। वे शिया और फारसी इस्लामी परंपरा का निर्वाह करते थे। वे शासन करने के लिए लाये गये थे। वे अज़री तुर्की और फारसी बोलते थे। सूफी मूल के होने के कारण उन्होंने बाद में एक प्रभावी वंशावली तैयार की। सफ़वी शक्ति का मूल आधार तुर्कमान जनजातियों का संगठन था पर प्रशासनिक नौकरशाही में ईरानी तत्व भी बराबरी के स्तर पर मजबूत था। बाद में जॉरजियन और सिरकासियन नामक दो समूह और जुड़े। ये चारों तत्व (खासकर तुर्कमान समूह) बाहरी राजनीतिक संबंधों को मजबूती देने के स्रोत थे, क्योंकि वे हमेशा एक दूसरे के खिलाफ षड्यंत्र करते रहते थे।

बोध प्रश्न 1

1) मुगल शासकों के संदर्भ में मध्य एशिया के इतिहास के अध्ययन के महत्व का विवेचन कीजिए।

....

....

....

....

....

2) उज़बेगों और सफ़वियों के पूर्ववर्ती इतिहास का उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

3) तूरान और ईरान का भौगोलिक वर्णन प्रस्तुत कीजिए।

....

....

....

....

....

CENTRAL ASIA
TURKESTAN
TASHKENT
Syr Darya
ANDIJAN
KHOQAND
FARGHANA
KASHGHAR
KHIVA
T R A N S O X I A N A
GHAJDWAN
KARMINA
ZERAFSHAN
BUKHARA
SAMARKAND
QARATIBA
SHAHR-I-SUBZ
GHILGHANAK
CHARSUI
Amu Darya
QARSHI
HISSAR
TIRMIZ
QUNDUZ
TALIQAN
BALKH
SARIPUL
BAGHLAN
MAIMAN
BALAMURGHAB
MERV
TEJEND
SARKHAS
HERAT
Hari Rud
GHARJISTAN
KABUL
Kabul R.
PESHAWAR
Indus
INDUS
Jhelum
Chenab
Ravi
Sutlej
MULTAN
J H E L U M
QANDAHAR
Arghandab R.
Helmand
GHARNAB
C A S P I A N S E A
R. Atrak
RASHT
QAZVIN
ASTARABAD
DAMGHAN
SABZWAR
MESHAD
NISHAPUR
MAZINAN
P E R S I A

1.4 मध्य एशिया में राजनैतिक संघटन के समय का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

तैमूरकालीन ट्रांसऑक्सियाना में गृह युद्ध आम बात थी। इस दौरान ट्रांसऑक्सियाना के तैमूरी शासक (जैसे अबू सईद, मौहम्मद जूगी, सुल्तान हुसैन बैक़रा और मनूचीहर मिर्ज़ा) दश्त ए किपचक के उज़बेग शासक अबुलखैर से अपने प्रतिद्वन्द्वियों के खिलाफ सहायता मांगते रहते थे। उन्होंने तैमूरी राजनीति में सफलतापूर्वक हस्तक्षेप किया और अबू सईद (1451), मौहम्मद जूगी (1455), और अन्य शासकों को गद्दी दिलाने में मदद की। दश्त में अबुल खैर (1428-68) के साम्राज्य के पतन के बाद उसके पोते शैबानी ने मध्य एशिया में तैमूर शासकों की शरण ली। इस समय ट्रांसऑक्सियाना में पाँच राज्य थे। सुल्तान अबू सईद (1451-69) के तीन पुत्र सुल्तान महमूद मिर्ज़ा, सुल्तान अहमद मिर्ज़ा (1469-94) और उमर शेख मिर्ज़ा का तीन राज्यों पर कब्जा था, जिसमें समरकंद, बुखारा, तिरमिज़, हिसार, कुंदूज, बदखशान और फरग़ना और इसके आसपास के इलाके शामिल थे। चौथे तैमूरी राज्य बल्ख और खुरासान पर सुल्तान हुसैन बैक़रा का आधिपत्य था। इसके अलावा ताशकंद और मुगलिस्तान का मंगोल इलाका था जिस पर मंगोल शासक यूनुस खाँ (1462-87) और उसके दो पुत्रों महमूद खाँ और अहमद खाँ का शासन था। यूनुस खाँ की तीन बेटियों की शादी ऊपर उल्लिखित अबू सईद के बेटों के साथ हुई थी। इन पाँचों राज्यों के बीच कट्टर दुश्मनी थी और ये एक दूसरे से ईर्ष्या-द्वेष का भाव रखते थे। इस कारण इनमें अक्सर लड़ाई हुआ करती थी। ऐसी ही एक लड़ाई, जिसे सीर के युद्ध के नाम से जाना जाता है सुल्तान अहमद और सुल्तान महमूद के बीच लड़ी गई थी। इस युद्ध में मंगोल युद्ध कला का सामना करने के लिए सुल्तान अहमद ने शैबानी खाँ की सहायता ली। इसमें शैबानी खाँ अपने दल-बल के साथ शामिल हुआ। हालांकि इस युद्ध में शैबानी खाँ सुल्तान अहमद मिर्ज़ा की सहायता के लिए आया था, पर वह सुल्तान महमूद से पहले ही गुप्त संधि कर चुका था। इस कारण महमूद खाँ की अप्रत्याशित विजय हो गयी। इस सहायता के लिए उपहारस्वरूप शैबानी खाँ ओतरार का राज्यपाल बनाया गया। ओतरार क्वाराजमिया का एक शहर था। इससे शैबानी खाँ को ट्रांसऑक्सियाना में एक आधार मिल गया, जिसकी उसे काफी दिनों से प्रतीक्षा थी। इसके बाद शैबानी खाँ ने विभिन्न क्षेत्रों (खानेत) में फैली अव्यवस्था का फायदा उठाया और अपनी राजनीतिक कुशाग्रता और छल-बल से वहां पर कब्जा जमा लिया।

1.5 ट्रांसऑक्सियाना में उज़बेग सत्ता की स्थापना

उमर शेख और सुल्तान अहमद मिर्ज़ा की मौत के बाद सुल्तान महमूद मिर्ज़ा की भी हत्या कर दी गयी। समरकन्द और हिसार की गद्दी के लिए उसके दोनों पुत्र सुल्तान अली और बैसुन्धर मिर्ज़ा एक दूसरे के दुश्मन हो गये। तैमूरी साम्राज्य में फ़ैली अव्यवस्था के दौरान तरखान कुलीन वर्ग शक्तिशाली हो गया। उन्होंने न केवल पूरी राजस्व व्यवस्था पर अपना अधिकार जमा लिया वरन् 15 अवसरवादी संधियां की और एक शासक को दूसरे के खिलाफ लड़वाया। इस स्थिति का लाभ उठाकर शैबानी खाँ ने 1499 में तैमूरी सरदार बक़र तरख़ान से बुखारा छीन लिया और बाद में समरकन्द पर भी घेरा डाल दिया। चूंकि राजमाता जुहरा बेगी उज़बेग महिला थी अतः उसने समरकन्द समर्पण की एक शर्त रखी कि उसके बेटे सुल्तान अली को मनपसन्द प्रांत का राज्यपाल बनाया जाना चाहिए। इस प्रकार बिना युद्ध लड़े 1500 ई० में शैबानी खाँ का समरकन्द पर कब्ज़ा हो गया। जल्द ही सुल्तान अली की मौत हो गयी। उज़बेग बहुत जल्द ही निकाल फेंके गये। ख्वाजा अब्दुल मुकर्रम ने समरकन्दियों का नेतृत्व किया और बाबर को आमंत्रित किया। सरिपुल के युद्ध में (1501) बाबर की हार हुई। किसी प्रकार की सहायता के अभाव में बाबर ने समरकन्द छोड़ दिया और अपने चाचा महमूद खाँ के पास चला गया। 1503 के आरंभ में शैबानी खाँ ने बाबर, उसके मामू महमूद और अहमद खाँ के संयुक्त मोर्चे को जमकर हराया। बाबर के दोनों मामूओं को कैद भी कर लिया। बाबर के कुलीन तंबाल ने शैबानी खाँ को फरग़ना पर अधिकार जमाने के लिए आमंत्रित किया। शैबानी खाँ ने 1504 ई० में फरग़ना और कुंदूज पर अधिकार जमा लिया और बल्ख, मेमना और फरयाब को 1505 ई० में कुचल दिया। हालांकि पहले के रिश्तों का ख्याल कर शैबानी खाँ ने मंगोल खानों महमूद और अहमद (जिसकी कुछ समय पश्चात् ही मृत्यु हो गयी) को छोड़ दिया, पर अंततः महमूद खाँ और उसके पाँच बच्चों को मौत के घाट उतार दिया (1508) ताकि उसके साम्राज्य के लिए कोई खतरा न उत्पन्न हो सके।

सुल्तान हुसैन बैक़रा के नेतृत्व में तैमूर राजकुमार बाबर, बदिउज़्ज़माँ और मुज़्फ़्फ़र हुसैन ने एक साथ मिलकर उज़बेगों का सामना करने की योजना बनाई। इस संयुक्त योजना के कार्यान्वियन के पहले ही 1506 ई० में सुल्तान हुसैन का देहांत हो गया। हेरात में उत्तराधिकार युद्ध शुरू हुआ। बदिउज़्ज़माँ और मुज़फ़्फ़र हुसैन के द्वैध शासन के बावजूद अव्यवस्था बनी रही। अतः तैमूर राज्य पर अधिकार स्थापित होने में देर नहीं थी। इसके बाद जल्द ही 1509 ई० में शैबानी खाँ ने मोगलिस्तान के कसकों के खिलाफ अभियान शुरू किया। अब पूरा का पूरा ट्रांस्ऑकिसयाना शैबानी खाँ के कदमों पर पड़ा था। शैबानी खाँ द्वारा स्थापित साम्राज्य शैबानिद के नाम से जाना गया। तैमूर शासकों से उज़बेगों को सत्ता हस्तान्तरण के तात्कालिक कारण निम्नलिखित थेः

- बाद के तैमूर शासकों की व्यक्तिगत अक्षमता
- उनकी आपसी दुश्मनी
- उत्तराधिकार के स्पष्ट नियम का अभाव
- मज़बूत प्रशासन का अभाव

1.5.1 उज़बेगों, फारसियों और तैमूरों के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष

खुरासान पर अधिकार स्थापित होने के बाद शैबानी साम्राज्य और सफ़वियों की क्षेत्रीय सीमा-रेखा पास आ गयी। शैबानी खाँ महत्वाकांक्षी था, अतः उसने शाह इस्माइल को अपना मातहत बनाने का प्रयास किया, परिणामतः 1510 ई० में युद्ध हुआ, जिसमें शैबानी खाँ की हार हुई और वह मारा गया। शाह इस्माइल ने न केवल खुरासान पर कब्जा कर लिया बल्कि बाद में उज़बेगों से ट्रांसऑक्सियाना छीनने में बाबर की मदद भी की। समरकन्दियों ने बाबर का ज़ोरदार स्वागत किया, पर विधर्मी शिया शाह से उसके संबंध को स्वीकार नहीं किया। धीरे-धीरे प्रतिशोध की भावना फैली, जिसे बाबर के लालची अनुयायियों ने और भड़का दिया और इससे मध्य एशिया में उज़बेगों की स्थिति मज़बूत हुई।

1.5.2 उज़बेग सत्ता का पुनः उदय

मध्य एशिया से निष्कासन (1510-11) के बाद उज़बेग तुर्कीस्तान में जमा हुए, पर उनमें बाबर और शाह इस्मांइल की संयुक्त सेना का सामना करने की शक्ति नहीं थी। उज़बेग राजकुमारों में केवल उबेदुल्लाह ही कुछ महत्वाकांक्षी था। वह शैबानी खाँ का भतीजा था। हालांकि उसके पास स्रोत सीमित थे, पर उसने बाबर को हराकर ट्रांसऑक्सियाना पर कब्जा कर लिया। इसके बाद 1512-13 में धीरे-धीरे उज़बेगों ने बुखारा, समरकन्द और अन्य क्षेत्रों पर अधिकार जमा लिया। ऑटोमन सुल्तान सलीम (1512-20) ने 1514 ई० में शाह इस्माइल के खिलाफ युद्ध करने के लिए उबेदुल्लाह को आमंत्रित किया। हालांकि उबेदुल्लाह ने सलीम की सहायता नहीं की, पर सलीम ने अपनी सामरिक कुशलता के बल पर शाह इस्माइल को बुरी तरह हराया। 1526 की पानीपत की लड़ाई में बाबर ने इसी युद्ध नीति का अनुसरण किया। उबेदुल्लाह और अब्दुल्ला खाँ शैबानिद साम्राज्य के प्रमुख बादशाह थे। अब्दुल्ला खाँ अकबर का समकालीन था। उबेदुल्लाह और अब्दुल्ला खाँ (इनका शासन काल क्रमशः 1513-40 और 1565-98 के बीच रहा) ने ईरान के खिलाफ अनेक लड़ाईयां लड़ीं (देखिए इकाई 7)।

अस्तरखानिदः अब्दुल्ला खाँ के देहांत (1598) और छह महीने बाद उसके एकमात्र पुत्र और उत्तराधिकारी अब्दुल मोमिन की हत्या के बाद से इस राजवंश को अस्तरखानिद के नाम से जाना जाने लगा। रूसी आक्रमण के समय तक उज़बेग साम्राज्य कायम रहा। उपनिवेशवाद के संकट के समय अन्य एशियाई राज्यों के समान यह साम्राज्य भी छिन्न-भिन्न हो गया।

1.5.3 उज़बेग साम्राज्य

उज़बेग ट्रांसऑक्सियाना की राजस्व वसूली के मुख्य आधार युद्ध लूट, नगर कर और व्यापारिक स्रोत थे। कृत्रिम सिंचाई की सहायता से थोड़ी बहुत खेती की जाती थी। पर यह खेतिहर क्षेत्र इतना कम था कि ज्यादा कर (उपज का आधा) लगाने के बावजूद नगण्य आमदनी होती थी। रेशम मार्ग के रास्ते में होने के कारण मध्य युग में ट्रांसऑक्सियाना हमेशा फलता-फूलता रहा। कुछ मंगोल खानों के समय व्यापार मार्ग के

परिवर्तन और 1498 में एशिया से यूरोप तक के समुद्री मार्ग की खोज से व्यापार में गिरावट आयी। ऐतिहासिक लेख और व्यापारियों के दस्तावेज इसका प्रमाण हैं। तुर्क-मुगल परंपरा के लगातार मजबूत होते चले जाने से उज़बेगों के अधीन तैमूरियों के प्रशासनिक ढाँचे में भी मामूली परिवर्तन आया। सामाजिक-आर्थिक क्षेत्र में धर्मांधता, कट्टरपंथ और सांप्रदायवाद को बढ़ावा मिला। इसी के साथ-साथ राजनैतिक क्षेत्र में नक्शबंदी संतों के प्रभुत्व को बढ़ावा मिलने से उज़बेगों के अधीन एक नया आयाम सामने आया।

बोध प्रश्न 2

1) उज़बेगों द्वारा **ट्रांसऑक्सियाना** पर जमाए गए आधिपत्य के प्रमुख चरणों का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

....

....

....

....

....

2) तैमूरों के पतन के कारणों पर विचार कीजिए।

....

....

....

....

....

3) उज़बेगों, ईरानियों और तैमूरों के त्रिपक्षीय संबंध पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

....

....

....

....

....

1.6 सफ़वियों का उद्भव : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

सफ़वी साम्राज्य का उदय उसी भौगोलिक क्षेत्र में हुआ जहां कभी इलखानिद राज्य हुआ करता था। हलाकू साम्राज्य छोटे रूप में पुनः उभरा (जलेरिद साम्राज्य), यह मेसोपोटेमिया, अज़रबाइजान और बाद में शीर्वन में भी फैल गया। इलखानिद शासन के अन्य क्षेत्रों पर दो तुर्कमान संघों अक़ क्युयूनलू (सफेद भेड़) और कारा क्युयूनलू (काली भेड़) का आधिपत्य था। अक़ क्युयूनलू का मुख्यालय अमीद था और उनका अधिकार क्षेत्र दीयार बक्र तक फैला हुआ था। कारा क्युयूनलू का मुख्यालय अर्जिश (वेन झील के पूर्वी किनारे पर) में स्थित था। उनका राज्य उत्तर में एर्ज़े रूम और दक्षिण में मोसूल तक फैला हुआ था। इन दोनों राज्यों में विभिन्न नस्लों के लोग रहते थे, जैसे अरब, आर्मेनिया मूल के लोग, कुर्द और अन्य।

1.6.1 अक़ क्युयूनलू और कारा क्युयूनलू

उद्यमशील जहानशाह के नेतृत्व में कारा क्युयूनलू राजवंश वेन से लेकर ईरान और खुरासान के रेगिस्तान

तक और कैस्पियन सागर से फारस की खाड़ी तक फैला हुआ था। उन्होंने तैमूरों से अपने को स्वतंत्र कर लिया था। जहानशाह शियाओं के जनक के रूप में प्रसिद्ध था जबकि अक़ क्युयूनलू लोग सुन्नी थे। उज़ून हसन (1453-78) अक़ क्युयूनलू राजवंश का सबसे प्रसिद्ध बादशाह था, जिसने जहानशाह को हराकर लगभग समस्त ईरान पर अपना अधिकार जमा लिया था। इस प्रकार उसके साम्राज्य की सीमा तैमूरों की सीमा के पास आ गयी। ऑटोमन शासक मौहम्मद द्वितीय उसे बलवान शासक मानता था, क्योंकि उसका अनातोलिया, मेसोपोटेमिया, अज़रबाइजान और फारस के संसाधनों पर अधिकार था। इसके बावजूद 1473 में अपने उत्कृष्ट तोपखाने के बल पर आटोमन शासक ने उज़ून हसन को हरा दिया। उज़ून हसन की मौत (1478) के समय उसका तुर्कमान साम्राज्य फरात के ऊँचे इलाकों से लेकर बृहद् लवणीय रेगिस्तान तक और दक्षिण फारस में किरमान प्रांत और ट्रांसऑक्सियाना से मेसोपोटेमिया और फारस की खाड़ी तक फैला हुआ था।

उज़ून हसन खाँ की बहन ख़दिजा बेगम की शादी एक उद्यमी और प्रभावशाली शेख जुनैद (1447-60) के साथ हुई। वह सर्वाधिक लोकप्रिय सूफी संप्रदाय सफ़विया का नेता था और अरदबिल में उसका मुख्यालय था। शेख जुनैद शेख ज़ाहिद (1218-1301) के दामाद और शिष्य शेख सफीउद्दीन इशाक (1222-1334) का उत्तराधिकारी था। शफीउद्दीन इशाक (जिसके नाम पर सफ़वी वंश का नामकरण हुआ) ने न केवल शेख ज़ाहिद की सूफी परंपरा को ग्रहण किया बल्कि 1301 ई० में अरदबिल में खुद अपना सफ़विया संप्रदाय स्थापित किया। उनकी लोकप्रियता के कारण शेख सफीउद्दीन और उसके उत्तराधिकारी हमेशा कारा क्युयूनलू सुल्तानों की ईर्ष्या के पात्र बने रहे। शेख जुनैद सफ़वी संप्रदाय का पहला आध्यात्मिक दिग्दर्शक था। कारा क्युयूनलू शासक से टक्कर लेने के लिए उसने 10,000 सैनिकों का सैन्यबल इकठ्ठा किया। उसने संप्रदाय में लड़ाकूपन का समावेश किया और सूफी के स्थान पर माज़ी (आस्था के योद्धा) को प्रतिस्थापित किया। 1455 में उसकी मृत्यु के बाद उसके पुत्र और उत्तराधिकारी हैदर ने अपने मामू अमीर हसन बेग की लड़की से शादी की, जो जहानशाह को मारकर अजरबाइजान और दो ईराकों का बादशाह बन बैठा था। हैदर के तीन लड़के हुए, सुल्तान अली, इब्राहिम और इस्माइल। सबसे छोटा पुत्र इस्माइल (जन्म 1487) सफ़वी साम्राज्य का संस्थापक बना। सुल्तान हैदर ने खून के रंग से बारह पंखों वाली (बारह इमामों के प्रसंग में) एक टोपी बनवायी और अपने सभी अनुयायियों को इसी तरह की टोपी बनवाने का हुक्म दिया। इस कारण से उन्हें किज़िलबश (लाल सिर) कहा जाने लगा।

चर्क और दाघिस्तान के कबीलों पर हैदर ने चढ़ाई की। रास्ते में ही 1488 में, याकूब मिर्ज़ा के दामाद शिखत शासक फारूख़ यासर से हुए युद्ध में वह मारा गया। हालांकि अपनी बहन हलीमा बेगी आग़ा का ख्याल करते हुए उसने हैदर के तीनों भाइयों की जिंदगी बख्श दी पर उन्हें इस्तखार के किले में कैद कर दिया। जब याकूब मिर्ज़ा के बेटों बैसुनघर और रूस्तम मिर्ज़ा में लड़ाई छिड़ गयी तो रूस्तम मिर्ज़ा ने सुल्तान अली की मदद मांगी। जैसे ही रूस्तम मिर्ज़ा को सफलता मिली, उसने ईर्ष्यावश सुल्तान अली को मौत के घाट उतार दिया। सुल्तान अली को खतरे का आभास हो गया था अतः उसने इस्माइल को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था (1494)। जुलाई 1497 में रूस्तम मिर्ज़ा की मृत्यु तक इस्लाइम को कई प्रकार की दिक्कतों का सामना करना पड़ा। रूस्तम मिर्ज़ा की मृत्यु के बाद अरदबिल में गृह युद्ध छिड़ गया। इस्माइल ने इस मौके का फायदा उठाया और लोगों को अपने बिखरे साथियों को एकत्रित करने के लिए दौड़ाया। कराच इलियास से सैनिक सहायता प्राप्त कर और तुर्कमान कबीले के अपने 7000 साथियों की मदद से उसने जॉरजिया का दमन किया और 1500 में पर्याप्त युद्ध-लूट का माल प्राप्त किया। पन्द्रह साल की उम्र में गुलिस्तां के किले में उसका मुकाबला शिरवन के फारूख यासार के साथ हुआ। उसने उसे मारकर बाकू पर आक्रमण किया। 1501 ई० में अक़ क्युयूनलू पर इस्माइल ने विजय प्राप्त की, तुर्कमान की राजधानी तबरीज में प्रवेश किया और शाह की पदवी के साथ गद्दी पर बैठा।

1.6.2 तुर्कमान और सफ़वी

सफ़वियों (नया राजवंश, जो ईरान में 1736 तक कायम रहा) की शक्ति के आधार शामलू, रूमलू, जुल्कदार, अफ़्शार, कचर, उस्तजलू और वारसक़ आदि तुर्कमान कबीले थे। अरदबिल संप्रदाय के तुर्कमान अनुयायी सफ़वियों के सहयोग के आधार थे क्योंकि सफ़वी शुद्ध तुर्कमान नहीं थे। धार्मिक एकबद्धता तथा सामाजिक और राजनीतिक कारणों से तुर्कमान लोग ईरानी शाह की ओर आकृष्ट हुए थे। अपने प्रजातीय और धार्मिक विभेदों के कारण एशिया माइनर या मध्य एशिया के तुंर्कमान अपने को ऑटोमन या उज़बेग

साम्राज्य से नहीं जोड़ पाये थे। दूसरी तरफ ऑटोमन या उज़बेग शासन में उनके लिए कुछ खास आकर्षण भी नहीं था। ईरानी साम्राज्य में तुर्कमानों को अभूतपूर्व महत्व प्राप्त था। आरंभ में सभी नागरिक, सैन्य और प्रशासनिक पदों पर उन्हीं की नियुक्ति हुई थी। सफ़वियों ने शासन और प्रशासन के क्षेत्र में तबरीज़ के शासकों का अनुकरण किया। शाह इस्माइल को तुर्कमान कबीलों की पूरी निष्ठा प्राप्त थी और इससे उसे काफी बल मिला था। शाह इस्माइल ने न केवल ईश्वर की परिकल्पना की परंपरा (अपने को धार्मिक और सांसारिक सत्ता का प्रतीक बताकर) का सहारा लिया बल्कि अपने दादा उज़ुन हसन के संबंध का सहारा लेकर उसने अपने शासन को वैधता प्रदान की। अक़ क्युयूनलू के साथ शाह इस्माइल के संबंध का भी महत्वपूर्ण योगदान था। निस्संदेह कारा क्युयूनलू और अक़ क्युयूनलू ने फारस की पुरानी राजनीतिक और सांस्कृतिक परंपरा का निर्वाह करते हुए नये राजवंश की स्थापना के लिए पहले से ही कुछ माहौल बनाया था।

1.6.3 शियावाद और सफ़वी

नये राजवंश ने कुछ बदला हुआ सैन्य और राजनैतिक ढांचा खड़ा किया, शिया धर्म को राज्य का धर्म बनाया और फारसी इस्लाम का ईरानीकरण किया अर्थात् "फारसी लोगों" का नया रूप सामने आया। सफ़वी राज्य का जन्म धर्म और राजनीति की कोख से हुआ। अतः धर्म और राजनीति का आपस में ताल-मेल स्पष्ट दिखाई पड़ता है। यह सुन्नी ऑटोमन और उज़बेग राज्यों के सांप्रदायिकतायुक्त दृष्टिकोण से काफी मिलता-जुलता है। शाह इस्माइल को कशान और कुम से भरपूर समर्थन मिला। यहां शिया लोगों का वर्चस्व था। दूसरी जगहों पर (जैसे सुन्नी बगदाद या हेरात में) उसके अभियान को प्रतिरोधों का सामना करना पड़ा।

1.6.4 सफ़वी और उज़बेग-ऑटोमन संघर्ष

शिया "सफ़वियों" (मुस्लिम दुनिया में सर्वोच्चता प्राप्ति के नये दावेदार) की उभरती शक्ति के कारण ऑटोमन फारस को अपने अधिकार में नहीं ले सके। वस्तुतः सोलहवीं शताब्दी में ईरानी उज़बेग और ईरानी ऑटोमन युद्ध आम बात हो गयी थी।

1594 में चलदीरां में हुए युद्ध में ऑटोमन शासक सलीम (1512-20) के हाथों परास्त होने के बाद शाह इस्माइल (1502-1524) ने हालांकि कोई युद्ध नहीं लड़ा पर उसके पुत्र और उत्तराधिकारी शाह तहमस्प (1524-76) को लगातार उज़बेगों और ऑटोमनों का सामना करना पड़ा। खुरासान पर उज़बेगों ने पाँच बार (1524-38) बड़े हमले किये और अजरबाइजान पर ऑटोमनों ने चार बार (1534-35, 1548, 1553) पूरी तैयारी के साथ आक्रमण किया, पर वे शाह तहमस्प को परास्त नहीं कर सके, पर उसने ऑटोमनों के साथ अमस्या के संधि पत्र पर (29 मई 1555) हस्ताक्षर किए। इन बाहरी खतरों के अलावा उसे कुछ अंदरूनी समस्याओं का भी सामना करना पड़ा। उदाहरण के लिए, तुर्कमान और ईरानियों, (इनका मूल, संस्कृति और रीति-रिवाज एक दूसरे से अलग थे) जिनमे प्रजातिगत और भाषागत विभिन्नता थी, के अंतर्गत जॉरजिया मूल के लोगों और सिरकासियन मूल के लोगों का भी समावेश हो गया। इससे दरबार के षडयंत्र और भी बढ़ गये। भारत के मुगलों से सफ़वियों के राजनयिक संबंध थे (देखिए इकाई 7), इसके साथ-साथ उन्होंने रूस और पुर्तगाल से भी संबंध ठीक रखने का प्रयास किया।

शाह तहमस्प के अलावा शाह अब्बास I (1588-1629, जिसके शासन काल को सफ़वी सत्ता का स्वर्ण युग माना जाता है), शाह अब्बास II (1642-66) और शाह सफी अन्य सफ़वी शासक थे। शाह अब्बास I, के नेतृत्व में सफ़वी राज्य धीरे-धीरे धार्मिक और सैन्य आधार को पीछे छोड़ते हुए पूर्व के पूर्ण विकसित साम्राज्य में विकसित हुआ। उसने कई प्रकार के प्रशासनिक और सैन्य सुधार लागू किए। निष्ठावानों (गुलामों) का एक नया समुदाय कायम किया गया, जिन्हें कई महत्वपूर्ण पद दिए गए। रॉबर्ट शरले को "तुर्कों के खिलाफ मास्टर जनरल" नियुक्त किया गया था और उसी के सुझाए हुए ढांचे पर एक मज़बूत सेना का संगठन किया गया था जिसे केन्द्र से ही वेतन दिया जाता था। इसके अतिरिक्त 500 बंदूकों के तोपखाने का एक बल तैयार किया ग".।।

बोध प्रश्न 3

1) शाह अब्बास I की उपलब्धियों पर संक्षेप में विचार कीजिए।

....

....

....

....

....

2) कारा क्युयूनलू और अक़ क्युयूनलू का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

3) सफ़वियों के आरम्भिक इतिहास पर प्रकाश डालिए।

....

....

....

....

....

4) सफ़वी साम्राज्य में तुर्कमानों के महत्व को रेखांकित कीजिए।

....

....

....

....

1.7 सारांश

इस इकाई में हमने मुगलों के मूल स्थान और उनके पूर्ववर्ती इतिहास को समझने की कोशिश की। भारत के दो प्रमुख पड़ोसी राज्यों—मध्य एशिया में ट्रांसऑक्सियाना और ईरान— की भौगोलिक रूपरेखा प्रस्तुत की गयी है। उज़बेग और सफ़वी के क्रमशः ट्रांसऑक्सियाना और ईराम साम्राज्यों के जातीय और राजनीतिक पूर्ववर्ती इतिहास की जानकारी दी गयी है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में इन दोनों साम्राज्यों का अध्ययन किया गया है। मुगलों का उद्‌भव मध्य एशिया में हुआ था और तीन दशकों तक इस क्षेत्र पर उन्होंने शासन किया। इस प्रकार मध्य एशियाई इतिहास की पृष्ठभूमि में ही भारत में मुगल शासन के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक आधार और प्रकृति को अच्छी तरह समझा जा सकता है।

1.8 शब्दावली

खानेत : यह खान के कार्यालय और अधिकार क्षेत्र को प्रतिबिंबित करता है। मंगोल खान एक खास क्षेत्र का राजनीतिक और प्रशासनिक मुखिया हुआ करता था।
बंजारा जीवन : कबीलों के बीच प्रचलित जीवन शैली, जिसमें वे किसी एक स्थान पर टिक कर नहीं रहते और भोजन पानी की खोज में इधर-उधर भटकते रहते हैं।
ऑटोमन : यह शब्द अरबी उस्मान का विकृत अंग्रेजी रूप है। ऑटोमन तुर्क थे, जिनकी शक्ति 15वीं शताब्दी के दौरान तेजी से बढ़ी। 1453 में कुस्तुनतुनिया (कान्सटेन्टिनोपल) पर अधिकार प्राप्त करने के बाद एशिया माइनर पर उनका पूरा कब्जा हो गया।
पशुपालन जीवन शैली : यह जीवन शैली भी कबीलों के बीच पनपी। इसमें जीवन का मुख्य आधार पशुपालन था। इस जीवन शैली से बंजारा जीवन शैली का आरंभ हुआ।
शिया : यह मुसलमानों का एक संप्रदाय है जो अपने को पैगम्बर मौहम्मद का सीधा उत्तराधिकारी मानते हैं और यह भी मानते हैं कि मुसलमान समुदाय को धार्मिक और राजनीतिक नेतृत्व देने का अधिकार उसे पैगम्बर से मिला है। यह नाम शियात अली के नाम पर आधारित है। यह हज़रत अली (पैगम्बर मौहम्मद के चचेरे भाई और उनकी बेटी फातिमा के पति) के दल के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला अरबी भाषा का शब्द है।
सुन्नी : मुसलमानों का एक संप्रदाय जो शियाओं के दावे को स्वीकार नहीं करता। सुन्नी शब्द अरबी सुन्नत **से निकला है। सुन्नियों को कुरान** के बाद केवल **हदीस, जो शरिअत** (इस्लामी कानून) का स्त्रोत है में वर्णित पैगम्बर मौहम्मद के कथन और उपदेश ही मान्य हैं।
तुर्कमान समूह : एशिया माइनर और मध्य एशिया के कबीले।

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 1.1। आपके उत्तर में निम्नलिखित बातें शामिल होनी चाहिएँ:
   i) मुगल विजेता मध्य एशिया से आए और उन्होंने वहां शासन किया था।
   ii) भारत में मुगल शासन पर इसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।
   iii) इस दृष्टि से मध्य एशिया के संबंधों आदि का अध्ययन प्रासंगिक है।
2) देखिए भाग 1.3। आपके उत्तर में निम्नलिखित बातें शामिल होनी चाहिएँ:
   i) तूरान के उज़बेग चँगेज के बड़े पुत्र के वंशज थे।
   ii) उन्होंने अपना नाम उज़बेग खाँ से ग्रहण किया आदि।
3) देखिए भाग 1.2। आपके उत्तर में निम्नलिखित बातें शामिल होनी चाहिएँ:
   i) अरब विजेताओं ने **अंदरूनी** एशिया अर्थात् तूरान का नाम ट्रांसऑक्सियाना रख दिया, क्योंकि यह सीर और अमू नामक दो नदियों के बीच स्थित था।
   ii) ईरान में पहाड़ियों की शृंखला एशिया और कॉकेसस से लेकर पंजाब के समतल इलाके तक फैली थी, जिसे ईरानी पठार के नाम से भी जाना जाता है, आदि।

बोध प्रश्न 2

1) आपके उत्तर में निम्नलिखित बातें शामिल होनी चाहिएँ:
   तैमूर साम्राज्य में फैली अव्यवस्था का लाभ उठाकर उज़बेगों ने तैमूरों से बुखारा और समरकन्द छीन लिया। उज़बेगों ने बाबर और उसके मामू की संयुक्त फौज को हराकर फरगना, कुनदूज़, बल्ख, मेमना और फरयाब पर कब्जा कर लिया। हेरात में फैली अव्यवस्था का लाभ उठाकर उज़बेगों ने वहां भी कब्जा जमा लिया। (देखिए भाग 1.4 और 1.5)
2) आपके उत्तर में निम्नलिखित बातें शामिल होनी चाहिएँ:
   बाद के तैमूर शासकों की व्यक्तिगत अक्षमता, आपसी वैमनस्य, आदि (देखिए भाग 1.5)

3) आपके उत्तर में निम्नलिखित बातें शामिल होनी चाहिएँ :
खुरासान पर विजय प्राप्त करने के बाद उज़बेगों की सीमा सफ़वी फारस के नज़दीक आ गयी। इस इलाके में उज़बेगों ने अपनी प्रभुसत्ता स्थापित करनी चाही, पर वे फारसियों द्वारा दबा दिए गए, आदि। (देखिए उपभाग 1.5.1)

बोध प्रश्न 3

1) आपके उत्तर में निम्नलिखित बातें शामिल होनी चाहिएँ :
अक क्युयूनलू (सफेद भेड़) और कारा क्युयूनलू (काली भेड़) तुर्कमान राज्यसंघ थे, अक क्युयूनलू की राजधानी आमिद में और कारा क्युयूनलू का मुख्यालय अर्जिश में स्थित था, आदि (देखिए उपभाग 1.6.1)

2) आपके उत्तर में निम्नलिखित बातें शामिल होनी चाहिएँ :
प्रमुख अक़ क्युयूनलू नेता उजुन हसन की बहन की शादी शेख जुनैद के साथ हुई थी, जो सफ़वी नाम के एक सूफ़ी संप्रदाय का नेता था। इसका मुख्यालय अरदबिल में था। उसके पुत्र और उत्तराधिकारी हैदर ने कारा क्युयूनलू के शासक को मार डाला और अज़रबाइजान का शासक बन बैठा, उसके छोटे पुत्र इस्माइल ने सफ़वी साम्राज्य की स्थापना की, आदि। (देखिए भाग 1.6 और उपभाग 1.6.1)

3) आपके उत्तर में निम्नलिखित बातें शामिल होनी चाहिएँ :
तुर्कमान कबीले सफ़वी साम्राज्य के प्रमुख आधार-स्तम्भ थे, उन्होंने शासक वर्ग का आधार निर्मित किया, आदि। (देखिए उपभाग 1.6.2)

4) आपके उत्तर में निम्नलिखित बातें शामिल होनी चाहिएँ :
शाह अब्बास I के समय में सफ़वी राज्य एक साम्राज्य के रूप में उभरा, उसने कई प्रशासनिक और सैन्य सुधार लागू किए, आदि। (देखिए भाग 1.7)